This question paper contains 4 printed pages. Roll No..

305-I

B.A./B.Ed. (Four Year) (Part-III) EXAMINATION MAY, 2025

B.A.-B.Ed.-05/06/07 (G-B)

हिन्दी साहित्य-I

(आधुनिक काव्य)

Time Allowed : Three Hours **Maximum Marks: 100**

समय : तीन घंटे **अधिकतम अंक : 100**

किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर-पुस्तिका नही दी जायेगी। अतः परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर-पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर लिखें।

किसी भी एक प्रश्न के अन्तर्गत पूछे गए विभिन्न प्रश्नों के उत्तर, उत्तर-पुस्तिका में अलग-अलग स्थानों पर हल करने के बजाय एक ही स्थान पर हल कीजिए।

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न-पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखिए।

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक सामने अंकित हैं।

भाग-I

1. निम्नलिखित पद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- [4×10=40]

(क) वेदने,तू भी भली बनी।

पाई मैंने आज तुझी में अपनी चाह घनी।

नई किरण छोडी है तूने, तू वह हीर-कनी,

सजग रहूँ मैं, साल हृदय में, ओ प्रिय-विशिख-अनी!

ठंडी होगी देह न मेरी, रहे दृगम्बु-सनी,

तू ही उष्ण उसे रक्खेगी मेरी तपन-मनी!

आ, अभाव की एक आत्मजें, और अदृष्टि-जनी!

तेरी ही छाती है सचमुच उपमोचितस्तनी!

अरी वियोग-समाधि, अनोखी, तू क्या ठीक ठनी,

अपने को, प्रिय को, जगती को देखूँ खिंची-तनी।

मन-सा मानिक मुझे मिला है तुझमें उपल-खनी,

तुझे तभी त्यागूँ जब सजनी, पाऊँ प्राण-धनी।

अथवा

अरी व्याधि की सूत्र-धारिणी

अरी आधि, मधुमय अभिशाप

हृदय गगन में धूमकेतु सी,

पुण्य सृष्टि में सुन्दर पाप।

मनन करावेगी तू कितना?

उस चिश्चिंत जाति का जीव,

अमर मरेगा क्या? तू कितनी

गहरी डाल रही है नींव!

(ख) माँ है वह! है, इसी से हम बने हैं।

किंतु हम हैं द्वीप।

हम धारा नहीं हैं

स्थिर समर्पण है हमारा। हम सदा से द्वीप हैं स्रोतस्विनी के

किंतु हम बहते नहीं हैं। क्योंकि बहना रेत होना है।

हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं।

पैर उखड़ेंगे। प्लवन होगा। ढहेंगे। सहेंगे। बह जाएँगे।

और फिर हम चूर्ण होकर भी कभी या धार बन सकते?

रेत बन कर हम सलिल को तनिक गँदला ही करेंगे।

अनुपयोगी ही बनाएँगे।

अथवा

एक आदमी

रोटी बेलता है

एक आदमी रोटी खाता है

एक तीसरा आदमी भी है

जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है

वह सिर्फ रोटी से खेलता है

मैं पूछता हूँ-

'यह तीसरा आदमी कौन है?'

मेरे देश की संसद मौन है।

(ग) तुंग हिमालय के कंधों पर

छोटी बड़ी कई झीलें हैं,

उनके श्यामल नील सलील में

समतल देशों से आ-आकर

पावस की ऊमस से आकुल

तिक्त-मधुर विषतंतु खोजते

हंसों को तिरते देखा है।

बादल को घिरते देखा है।

अथवा

चाह नहीं मैं सुरबाला के

गहनों में गूँथा जाऊँ,

चाह नहीं, प्रेमी-माला में

बिंध प्यारी को ललचाऊँ

चाह नहीं, सम्राटों के शव

पर हे हरि, डाला जाऊँ

चाह नहीं, देवों के सिर पर

चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ

मुझे तोड़ लेना वनमाली!

उस पथ पर तुम देना फेंक,
मातृभूमि पर शिश चढ़ाने
जिस पथ पर जावें वीर अनेक।

(घ) ओ मेरे विवेक,
मुझसे प्रश्न मत करो,
प्रश्नों की बेला अब नहीं रही,
अब मैं केवल प्रतीक्षा हूँ,
कवचित कर्म हूँ,
प्रतिश्रुत युद्ध हूँ,
निर्णय हूँ सबका,
सबके लिए।"

अथवा

धनुष, बाण, खड्ग और शिरस्त्राण,
मुझे ऐसी जय नहीं चाहिए,
बाण-बिद्ध पाँखी-सा विवश,
साम्राज्य नहीं चाहिए,
मानव के रक्त पर पग धरती आती,
सीता भी नहीं चाहिए, सीता भी नहीं।

2. साकेत के नवम् सर्ग के आधार पर उर्मिला के विरह वर्णन की विशेषताओं का उद्घाटन कीजिए। [15]

अथवा

अज्ञेय द्वारा रचित 'जो पुल बनाएंगे' कविता का मूल प्रतिपाद्य उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

3. पाठ्यक्रम में संकलित कविताओं के आधार पर निराला के काव्य सौंदर्य पर प्रकाश डालिए। [15]

अथवा

पुष्प की अभिलाषा कविता में निहित राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डालिए।

4. 'संशय की एक रात' में निहित युगीन संदर्भों की विवेचना कीजिए। [15]

अथवा

'संशय की एक रात' के मूल चिंतन एवं प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

5. प्रयोगवाद का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए उसकी प्रवृत्तियों की समीक्षा कीजिए। [15]

अथवा

हिन्दी के प्रगतिवादी कवियों एवं प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।